



Khyati

16 Aug 1989

11:35 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 119222901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 16/08/1989
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 11:35:00 घंटे
इष्ट _____: 14:20:38 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 11:13:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:04:17 घंटे
साम्पातिक काल _____: 08:52:19 घंटे
सूर्योदय _____: 05:50:44 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:59:34 घंटे
दिनमान _____: 13:08:50 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 29:38:33 कर्क
लग्न के अंश _____: 13:52:15 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: मकर - शनि
नक्षत्र-चरण _____: श्रवण - 3
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: सौभाग्य
करण _____: विष्टि
गण _____: देव
योनि _____: वानर
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: खे-खेमा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1911	श्रावण	25
पंजाबी	संवत : 2046	भाद्रपद	1
बंगाली	सन् : 1396	श्रावण	31
तमिल	संवत : 2046	आदी	32
केरल	कोल्लम : 1164	कर्कदम	32
नेपाली	संवत : 2046	भाद्रपद	1
चैत्रादि	संवत : 2046	श्रावण	शुक्ल 14
कार्तिकादि	संवत : 2046	श्रावण	शुक्ल 14

पंचांग

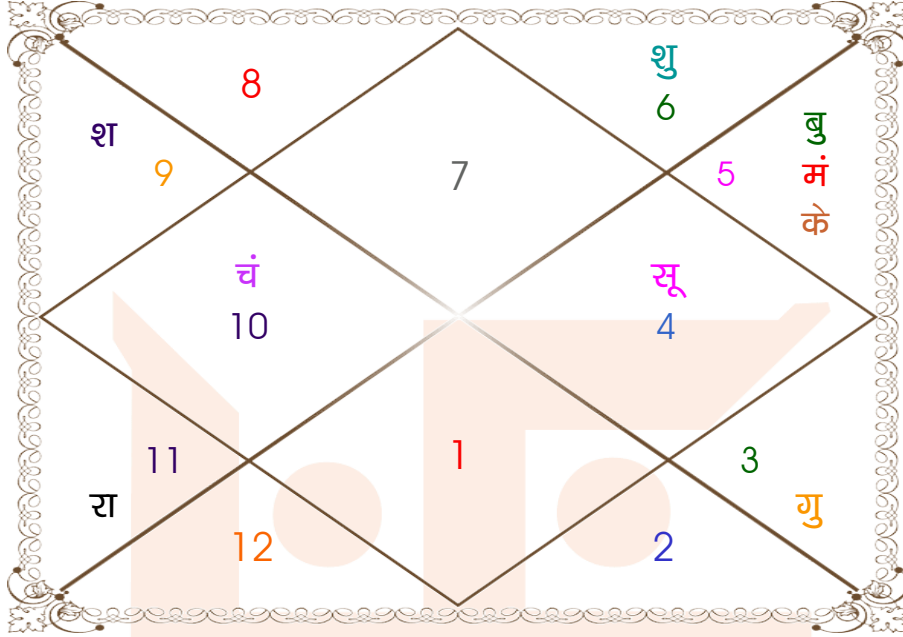
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 14
तिथि समाप्ति काल _____ : 10:56:23
जन्म तिथि _____ : 15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : श्रवण
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 20:37:03 घंटे
जन्म योग _____ : श्रवण
सूर्योदय कालीन योग _____ : सौभाग्य
योग समाप्ति काल _____ : 20:36:39 घंटे
जन्म योग _____ : सौभाग्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 10:56:23 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 34:12:01
भभोग _____ : 56:47:07
भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 4 वर्ष 0 मा 1 दि

घात चक्र

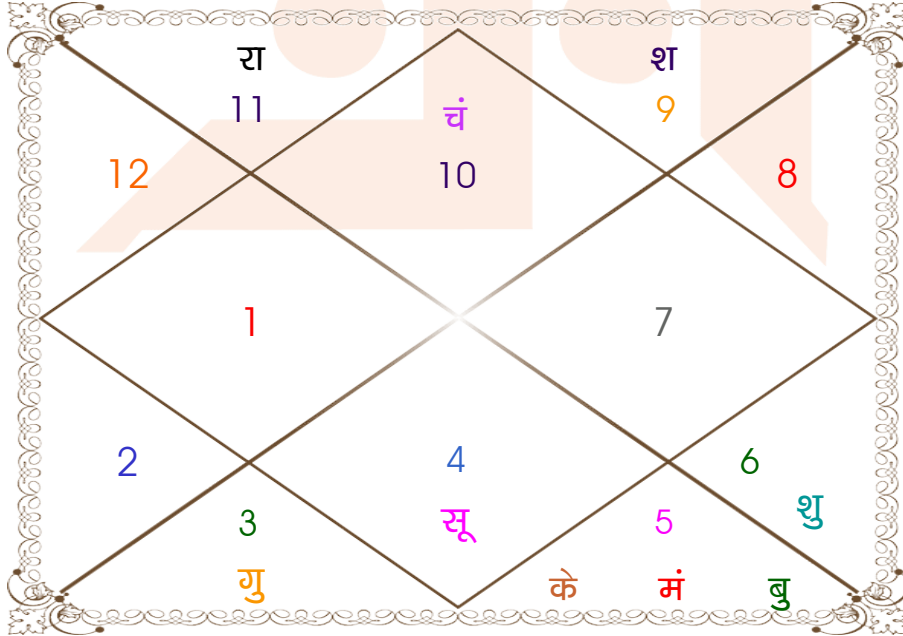
मास _____ : वैशाख
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : मंगलवार
नक्षत्र _____ : रोहिणी
योग _____ : वैधृति
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : कुम्भ
सूर्य _____ : कुम्भ
चन्द्र _____ : वृश्चिक
मंगल _____ : मीन
बुध _____ : धनु
गुरु _____ : मेष
शुक्र _____ : वृष
शनि _____ : मकर
राहु _____ : मिथुन

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

			गु
रा			सू
चं			के मं बु
श		ल	शु

लग्न कुंडली

गु		रा
सू		चं
बु के	मं शु	ल
		श

विंशोत्तरी
चन्द्र 4वर्ष 0मा 1दि
चन्द्र

16/08/1989

19/08/2103

चन्द्र	17/08/1993
मंगल	17/08/2000
राहु	18/08/2018
गुरु	18/08/2034
शनि	17/08/2053
बुध	18/08/2070
केतु	17/08/2077
शुक्र	17/08/2097
सूर्य	19/08/2103

योगिनी
मंगला 0वर्ष 4मा 24दि
मंगला

09/01/2025

09/01/2026

मंगला	19/01/2025
पिंगला	08/02/2025
धान्या	11/03/2025
भ्रामरी	20/04/2025
भद्रिका	10/06/2025
उल्का	10/08/2025
सिद्धा	20/10/2025
संकटा	09/01/2026

Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

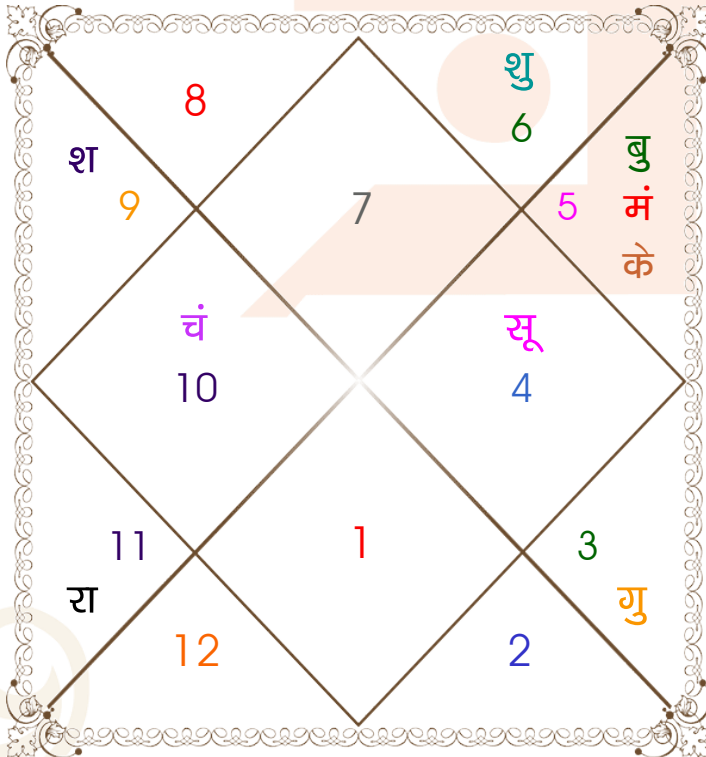
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	13:52:15	309:43:57	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	---
सूर्य			कर्क	29:38:33	00:57:39	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	मित्र राशि
चंद्र			मक	17:59:42	14:07:20	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	सम राशि
मंगल		अ	सिंह	14:18:11	00:38:01	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि
बुध			सिंह	23:44:08	01:24:18	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	मित्र राशि
गुरु			मिथु	09:27:10	00:11:02	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			कन्या	04:06:26	01:11:31	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	नीच राशि
शनि	व		धनु	14:07:30	00:02:24	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	सम राशि
राहु	व		कुंभ	02:05:42	00:00:12	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	केतु	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	02:05:42	00:00:12	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		धनु	07:52:34	00:01:11	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	---
नेप	व		धनु	16:13:46	00:01:04	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	---
प्लूटो			तुला	18:49:03	00:00:49	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	---
दशम भाव			कर्क	16:54:58	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	बुध	--

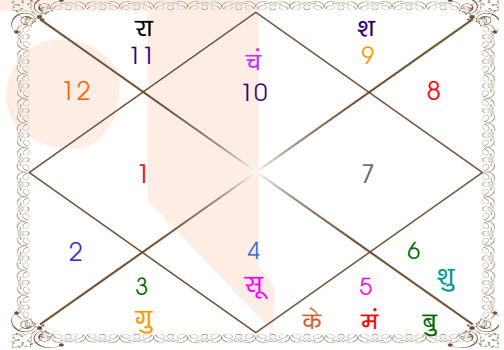
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:42:54

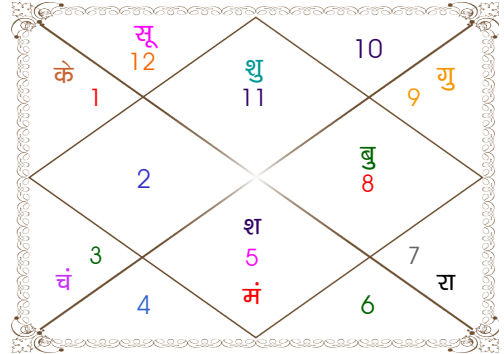
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 29:22:42	तुला 13:52:15
2	तुला 29:22:42	वृश्चिक 14:53:09
3	धनु 00:23:36	धनु 15:54:03
4	मकर 01:24:31	मकर 16:54:58
5	कुम्भ 01:24:31	कुम्भ 15:54:03
6	मीन 00:23:36	मीन 14:53:09
7	मीन 29:22:42	मेष 13:52:15
8	मेष 29:22:42	वृष 14:53:09
9	मिथुन 00:23:36	मिथुन 15:54:03
10	कर्क 01:24:31	कर्क 16:54:58
11	सिंह 01:24:31	सिंह 15:54:03
12	कन्या 00:23:36	कन्या 14:53:09

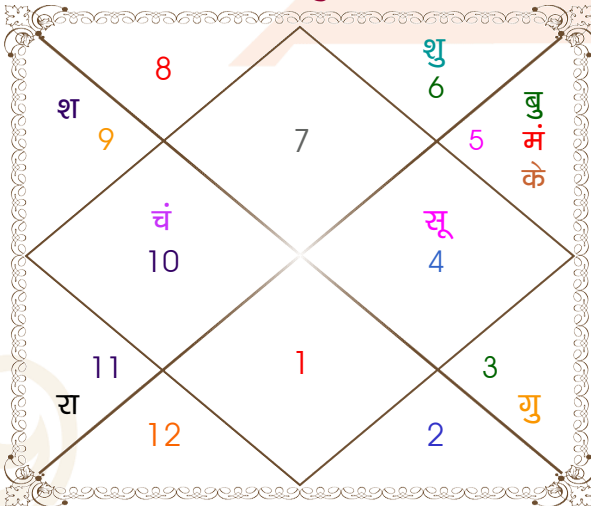
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	13:52:15
2	वृश्चिक	12:57:42
3	धनु	14:09:16
4	मकर	16:54:58
5	कुम्भ	19:15:36
6	मीन	18:34:52
7	मेष	13:52:15
8	वृष	12:57:42
9	मिथुन	14:09:16
10	कर्क	16:54:58
11	सिंह	19:15:36
12	कन्या	18:34:52

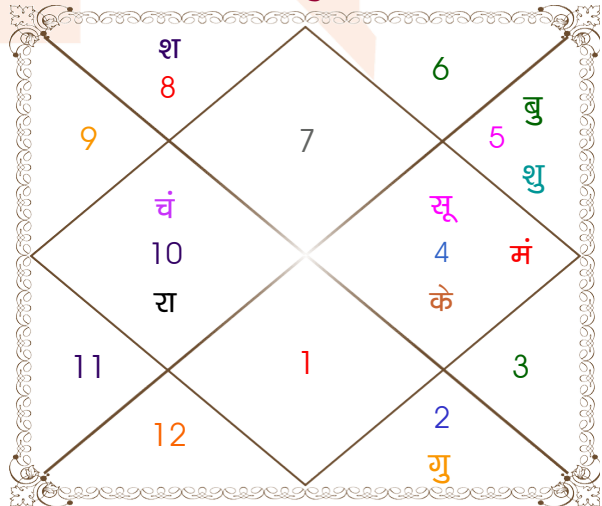
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 4 वर्ष 0 मास 1 दिन

चंद्र 10 वर्ष 16/08/1989 17/08/1993	मंगल 7 वर्ष 17/08/1993 17/08/2000	राहु 18 वर्ष 17/08/2000 18/08/2018	गुरु 16 वर्ष 18/08/2018 18/08/2034	शनि 19 वर्ष 18/08/2034 17/08/2053
00/00/0000	मंगल 13/01/1994	राहु 30/04/2003	गुरु 05/10/2020	शनि 20/08/2037
00/00/0000	राहु 01/02/1995	गुरु 23/09/2005	शनि 18/04/2023	बुध 30/04/2040
00/00/0000	गुरु 08/01/1996	शनि 30/07/2008	बुध 24/07/2025	केतु 08/06/2041
00/00/0000	शनि 16/02/1997	बुध 16/02/2011	केतु 30/06/2026	शुक्र 08/08/2044
16/08/1989	बुध 13/02/1998	केतु 06/03/2012	शुक्र 28/02/2029	सूर्य 21/07/2045
बुध 17/11/1990	केतु 12/07/1998	शुक्र 06/03/2015	सूर्य 17/12/2029	चंद्र 19/02/2047
केतु 18/06/1991	शुक्र 11/09/1999	सूर्य 29/01/2016	चंद्र 18/04/2031	मंगल 30/03/2048
शुक्र 16/02/1993	सूर्य 17/01/2000	चंद्र 30/07/2017	मंगल 24/03/2032	राहु 04/02/2051
सूर्य 17/08/1993	चंद्र 17/08/2000	मंगल 18/08/2018	राहु 18/08/2034	गुरु 17/08/2053
बुध 17 वर्ष 17/08/2053 18/08/2070	केतु 7 वर्ष 18/08/2070 17/08/2077	शुक्र 20 वर्ष 17/08/2077 17/08/2097	सूर्य 6 वर्ष 17/08/2097 19/08/2103	चंद्र 10 वर्ष 19/08/2103 00/00/0000
बुध 14/01/2056	केतु 14/01/2071	शुक्र 17/12/2080	सूर्य 05/12/2097	चंद्र 18/06/2104
केतु 10/01/2057	शुक्र 15/03/2072	सूर्य 17/12/2081	चंद्र 06/06/2098	मंगल 17/01/2105
शुक्र 11/11/2059	सूर्य 21/07/2072	चंद्र 18/08/2083	मंगल 11/10/2098	राहु 19/07/2106
सूर्य 17/09/2060	चंद्र 19/02/2073	मंगल 17/10/2084	राहु 05/09/2099	गुरु 18/11/2107
चंद्र 16/02/2062	मंगल 18/07/2073	राहु 18/10/2087	गुरु 24/06/2100	शनि 18/06/2109
मंगल 13/02/2063	राहु 05/08/2074	गुरु 18/06/2090	शनि 06/06/2101	बुध 17/08/2109
राहु 02/09/2065	गुरु 12/07/2075	शनि 17/08/2093	बुध 13/04/2102	00/00/0000
गुरु 08/12/2067	शनि 20/08/2076	बुध 17/06/2096	केतु 19/08/2102	00/00/0000
शनि 18/08/2070	बुध 17/08/2077	केतु 17/08/2097	शुक्र 19/08/2103	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 3 वर्ष 11 मा 22 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु	गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल
24/07/2025	30/06/2026	28/02/2029	17/12/2029	18/04/2031
30/06/2026	28/02/2029	17/12/2029	18/04/2031	24/03/2032
केतु 13/08/2025	शुक्र 09/12/2026	सूर्य 14/03/2029	चंद्र 27/01/2030	मंगल 08/05/2031
शुक्र 09/10/2025	सूर्य 27/01/2027	चंद्र 08/04/2029	मंगल 24/02/2030	राहु 28/06/2031
सूर्य 26/10/2025	चंद्र 18/04/2027	मंगल 25/04/2029	राहु 08/05/2030	गुरु 13/08/2031
चंद्र 23/11/2025	मंगल 14/06/2027	राहु 08/06/2029	गुरु 12/07/2030	शनि 06/10/2031
मंगल 13/12/2025	राहु 07/11/2027	गुरु 17/07/2029	शनि 27/09/2030	बुध 23/11/2031
राहु 02/02/2026	गुरु 16/03/2028	शनि 01/09/2029	बुध 05/12/2030	केतु 13/12/2031
गुरु 20/03/2026	शनि 17/08/2028	बुध 12/10/2029	केतु 03/01/2031	शुक्र 08/02/2032
शनि 13/05/2026	बुध 02/01/2029	केतु 29/10/2029	शुक्र 25/03/2031	सूर्य 25/02/2032
बुध 30/06/2026	केतु 28/02/2029	शुक्र 17/12/2029	सूर्य 18/04/2031	चंद्र 24/03/2032
गुरु - राहु	शनि - शनि	शनि - बुध	शनि - केतु	शनि - शुक्र
24/03/2032	18/08/2034	20/08/2037	30/04/2040	08/06/2041
18/08/2034	20/08/2037	30/04/2040	08/06/2041	08/08/2044
राहु 02/08/2032	शनि 08/02/2035	बुध 07/01/2038	केतु 23/05/2040	शुक्र 18/12/2041
गुरु 27/11/2032	बुध 13/07/2035	केतु 05/03/2038	शुक्र 30/07/2040	सूर्य 14/02/2042
शनि 15/04/2033	केतु 15/09/2035	शुक्र 16/08/2038	सूर्य 19/08/2040	चंद्र 21/05/2042
बुध 17/08/2033	शुक्र 16/03/2036	सूर्य 04/10/2038	चंद्र 22/09/2040	मंगल 28/07/2042
केतु 07/10/2033	सूर्य 10/05/2036	चंद्र 25/12/2038	मंगल 15/10/2040	राहु 17/01/2043
शुक्र 03/03/2034	चंद्र 10/08/2036	मंगल 20/02/2039	राहु 15/12/2040	गुरु 20/06/2043
सूर्य 15/04/2034	मंगल 13/10/2036	राहु 18/07/2039	गुरु 07/02/2041	शनि 21/12/2043
चंद्र 27/06/2034	राहु 27/03/2037	गुरु 26/11/2039	शनि 12/04/2041	बुध 01/06/2044
मंगल 18/08/2034	गुरु 20/08/2037	शनि 30/04/2040	बुध 08/06/2041	केतु 08/08/2044
शनि - सूर्य	शनि - चंद्र	शनि - मंगल	शनि - राहु	शनि - गुरु
08/08/2044	21/07/2045	19/02/2047	30/03/2048	04/02/2051
21/07/2045	19/02/2047	30/03/2048	04/02/2051	17/08/2053
सूर्य 25/08/2044	चंद्र 07/09/2045	मंगल 15/03/2047	राहु 02/09/2048	गुरु 07/06/2051
चंद्र 23/09/2044	मंगल 11/10/2045	राहु 15/05/2047	गुरु 19/01/2049	शनि 01/11/2051
मंगल 13/10/2044	राहु 06/01/2046	गुरु 08/07/2047	शनि 03/07/2049	बुध 11/03/2052
राहु 04/12/2044	गुरु 24/03/2046	शनि 10/09/2047	बुध 27/11/2049	केतु 04/05/2052
गुरु 20/01/2045	शनि 23/06/2046	बुध 06/11/2047	केतु 27/01/2050	शुक्र 05/10/2052
शनि 16/03/2045	बुध 13/09/2046	केतु 30/11/2047	शुक्र 20/07/2050	सूर्य 20/11/2052
बुध 04/05/2045	केतु 17/10/2046	शुक्र 05/02/2048	सूर्य 10/09/2050	चंद्र 06/02/2053
केतु 24/05/2045	शुक्र 21/01/2047	सूर्य 25/02/2048	चंद्र 05/12/2050	मंगल 01/04/2053
शुक्र 21/07/2045	सूर्य 19/02/2047	चंद्र 30/03/2048	मंगल 04/02/2051	राहु 17/08/2053

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

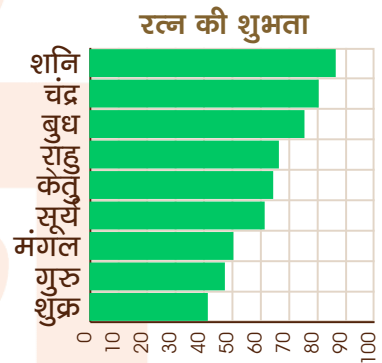
मूलांक	7
भाग्यांक	6
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	86%	पराक्रम, सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	80%	सुख, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	75%	धनार्जन, भाग्योदय, कम खर्च
गोमेद	राहु	66%	सन्तति सुख, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	64%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	61%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
मूंगा	मंगल	50%	धनार्जन, दम्पति, धन
पुखराज	गुरु	47%	नेष्ट भाग्य, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	41%	व्यय, दुर्घटना, रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	17/08/1993	67%	92%	50%	81%	47%	41%	86%	53%	52%
मंगल	17/08/2000	67%	86%	62%	62%	55%	41%	86%	53%	70%
राहु	18/08/2018	47%	67%	25%	75%	47%	52%	92%	78%	52%
गुरु	18/08/2034	67%	86%	56%	62%	61%	16%	86%	66%	64%
शनि	17/08/2053	47%	67%	25%	81%	47%	52%	98%	72%	52%
बुध	18/08/2070	67%	67%	50%	88%	47%	52%	86%	66%	64%
केतु	17/08/2077	47%	67%	56%	75%	47%	52%	73%	53%	77%
शुक्र	17/08/2097	47%	67%	50%	81%	47%	58%	92%	72%	70%
सूर्य	19/08/2103	73%	86%	56%	75%	55%	16%	73%	53%	52%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	16/08/1989-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
शुभ
सम
सम

क्षेत्र

पराक्रम
सुख
सन्तति सुख
दाम्पत्य कलह
अल्प बचत

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।

स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगी। पति का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकते हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है। अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी। मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। अतः आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी। प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी एवं एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव में राहु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है ।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध, शुक्र और राहु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्त्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वाला, कवि, कोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

मंगल

ग्यारहवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अर्जित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी आपको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्म, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान्, बुद्धिमान्, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- गुरु
(18/08/2018 - 18/08/2034)**

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 18/08/2018 आरम्भ और 18/08/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु नवम् भाव में स्थित है तथा नवम् भाव विश्वास, भाग्य, अन्तर्ज्ञान, त्याग और दान, पिता, गुरु, दूर की यात्रा, उच्च शिक्षा तथा विदेश यात्रा का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है तथा जन्म कुण्डली में नवम् भाव में स्थित होकर प्रथम, तृतीय एवं पंचम भाव को देख रहा है और इन भावों पर अच्छा प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष का यह दशा काल आपके लिए बहुत अच्छा होगा।

स्वास्थ्य :

नवम् भाव में स्थित होकर प्रथम भाव पर गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप आप एक स्वस्थ जीवन व्यतीत करेंगे तथा दैनिक कार्य और उत्सव का भरपूर आनन्द उठाएंगे। आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

व्यवसाय :

आपको नौकरी में पदोन्नति के अच्छे अवसर मिलेंगे जिससे आपकी आर्थिक तथा कार्यालयीय स्तर में वृद्धि होगी। व्यवसाय के प्रति आपके दिमाग में कुछ नवीन विचार आएंगे जिन्हें कार्यान्वित करने में आप सक्षम होंगे। आपको विदेश-गमन का अवसर मिलेगा और आप वहाँ अच्छा धनोपार्जन कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

गुरु पंचम भाव को देखते हुए नवम् भाव में स्थित है जिससे आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण तथा आनन्दमय होगा। आपके जीवन साथी पूर्ण सहयोग करेंगे और बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिनसे आपको आनन्द मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

धार्मिक स्वभाव होने के कारण आप साहित्य तथा सहयोगी विषयों का अध्ययन जारी रखेंगे।

**अंतर्दशा :- गुरु - बुध
(18/04/2023 - 24/07/2025)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 18/08/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 18/04/2023 को प्रारंभ होकर 24/07/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाजिरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपको विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा। आपके बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे। विज्ञान और गणित में प्रवीण बन सकते हैं। समृद्धि और प्रसन्नता का योग है। निवेश से लाभ हो सकता है। कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि हो सकती है। नये-नये विचार आएंगे, कल्पनाशक्ति सबल होगी। शिशु का जन्म हो सकता है। संतान सुखकारी होगी। करतब के खेल, नाटक और बाल मनोविज्ञान में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा; निवेश से लाभ होगा। आपके पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं, महत्वपूर्ण फैसले कर सकते हैं। माता को विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा; ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, विश्वविद्यालय में प्रवेश, विद्वानों की संगति का संकेत है।

आपकी संतान को साझेदारी से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो आय अच्छी होगी, कार्यों में सफलता मिलेगी; प्रसिद्ध और लोकप्रिय होंगे। परामर्शदाताओं की आय उत्तम होगी; सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बायें कान और पैरों के रोगों से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए गाय को हरा चारा और सब्जियां खिलाएं।

**अंतर्दशा :- गुरु - केतु
(24/07/2025 - 30/06/2026)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 18/08/2018 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 24/07/2025 को प्रारंभ होकर 30/06/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आपके सम्मान में वृद्धि होगी, प्रसिद्ध बनेंगे। सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे, धनी बनेंगे। बहुत लोग अप्रत्याशित सहायता करेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी। अपारंपरिक माध्यम से धनागम हो सकता है। बड़े भाई-बहनों से संबंध मधुर होंगे। संतान से सुख मिलेगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ हो सकता है। आपके पिता के धन और सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। माता को साझेदार के माध्यम से धनार्जन होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए लंबी यात्रा, सुनियोजित कार्य, उत्तम स्वास्थ्य और अध्यात्म में रुचि का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों में लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बायें कान, पैर और उदर की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए गणेशजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र
(30/06/2026 - 28/02/2029)**

आपके लिए बृहस्पति महादशा 18/08/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 30/06/2026 को प्रारंभ होकर 28/02/2029 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। मितव्ययता और बचत से धन का संचय हो सकता है। संचित धन को दूटने न दें। अध्यात्म और दान-धर्म में रुचि हो सकती है। लोगों की भलाई के कार्य करेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी। मुकदमे में जीत होगी। कर्ज अदा कर सकते हैं। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो संकत है।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम होगा; उन्हें शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता धनी बनेंगे; अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। माता की यात्राएं होंगी; धनी बनेंगी सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, उत्तम आय और जीवनशैली, विभिन्न माध्यमों से धनलाभ का संकेत है।

आपकी संतान के कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन हो सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंधों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को सफलता मिलेगी, लघु यात्राएं हो सकती हैं या मामूली परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारी सफल रहेंगे।

स्वास्थ्य का, विशेषकर आंखों का ध्यान रखें, संयम का जीवन जिएं। अरिष्ट से बचाव के लिए चावल, श्वेत वस्त्र, दही और चीनी का दान करें।

अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य
(28/02/2029 - 17/12/2029)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 18/08/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 28/02/2029 को प्रारंभ होकर 17/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे; उच्चपद प्राप्त होगा। स्पर्धियों और बाधाओं पर विजय होगी। सब कार्यों में कामयाबी मिलेगी। राजनीति में सफल हो सकते हैं। सरकार से लाभ हो सकता है। माता-पिता और बड़ों से लाभ होगा। बहुत से मित्र होंगे, जिनसे लाभ होगा, शिक्षा उत्तम होगी। समाज में सफलता मिलेगी; भाग्य साथ देगा।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। आपके पिता को कई माध्यमों से धनलाभ होगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में धनार्जन उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों के लिए परिवर्तन, अप्रत्याशित धन, यात्रा, अधिक खर्चों का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धा में सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो शत्रुओं पर विजय होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, किस्मत उत्तम रहेगी। परामर्शदाता उत्कृष्टता प्राप्त करेंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्त की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र
(17/12/2029 - 18/04/2031)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 18/08/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 17/12/2029 को आरंभ होकर 18/04/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपके परिवार में हंसी-खुशी का वातावरण रहेगा। माता से संबंध उत्तम रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी और परीक्षा में सफलता मिलेगी। अचल संपत्ति, भूमि आदि से लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिवार से संबंध भावनापूर्ण रहेंगे। कार्यों के लिए प्रशंसा होगी। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। समाज की भलाई का कार्य करेंगे। प्रसिद्धि मिलेगी। आपके जीवनसाथी सफल, प्रसिद्ध और धनी होंगे। आपके पिता को अप्रत्याशित धन मिल सकता है; वसीयत से लाभ हो सकता है। माता के पास सुख-साधन होंगे, प्रसन्न रहेंगी, धनी बनेंगी, बहुत से मित्र होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए धन, सुख-साधन, उत्तम शिक्षा, मृदु वाणी के कारण प्रशंसा का संकेत है।

आपकी संतान का मन भटक सकता है; अच्छा होगा अगर वे कार्य में ज्यादा परिवर्तन न करें, कृतसंकल्प रहें। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्चे बढ़ेंगे, बाधाएं आ सकती हैं। विदेश यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ में वृद्धि होगी, सहकर्म सहयोग करेंगे, कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा, यात्रा हो सकती है, सफल रहेंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मनोभावनाओं में उतार-चढ़ाव से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए दूध का दान करें।

